ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 572-575

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

युगद्रष्टा कहानीकार प्रेमचन्द

डॉ0 राम अधार सिंह यादव
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, एस0 एम0 कालेज चन्दौसी, सम्भल (उ0प्र0) भारत

Received- 03.08.2020,Revised- 08.08.2020, Accepted-11.08.2020 E-mail: - yramadhar64@gmail.com

सारांश : ***उपन्यासकार से इतर प्रेमचन्द का कहानी संसार इतना फैला है कि उसमें समूचा युग समाया हुआ है। प्रेमचन्द 1907 ई0 से लेकर 1936 ई0 तक लगातार कहानियाँ लिखते रहे। इस अवधि में उनकी प्रतिभा के वरदान स्वरूप रचित कहानियों में प्रेमचन्द ने मानव जीवन के सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला है। इन कहानियों की सामग्री वे अपने जीवन की घटनाओं से, इतिहास से, सामाजिक और राजनैतिक आन्दोलनों से और उन लोगों से जुटाते थे, जिनके बीच में वे रहते थे और जिन्हें जानते–पहचानते थे। अनेक स्थानों से सामग्री ग्रहण करने के कारण प्रेमचन्द की कहानियाँ सम्पूर्ण युग का प्रतिनिधित्व कर सकी। भारत की आत्मा की सच्ची तस्वीर यदि किसी एक रचनाकार में मिल सकती है तो वह प्रेमचन्द ही है। पं0 हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सही ही लिखा है– ''अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार–विचार, भाषा–भाव, रहन–सहन, आशा–आकांक्षा, दुख–सूख और सूझ–बूझ को जानना चाहतें हैं तो प्रेमचन्द से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता।'***

कुंजीभूत शब्द– उपन्यासकार, वरदान स्वरूप, सामाजिक, राजनैतिक, प्रतिनिधित्व, रचनाकार, परिचायक।

यह सर्वविदित है कि प्रेमचन्द ने अपना साहित्यिक जीवन उर्दू लेखन से आरम्भ किया। कायस्थ परिवार में जन्म लेने के कारण फारसी और उर्दू भाषा एवं साहित्य से उनके मानस का संस्कार हुआ। 1907 से 1910 के बीच प्रेमचन्द उर्दू कथाकार के रूप में ही जाने जाते हैं। उनकी पहली कहानी 'संसार का सबसे अनमोल रतन' 1907 में कानपुर के 'जमाना' पत्र में प्रकाशित हुआ। 1908 में इसी प्रेस में प्रेमचन्द का पहला कहानी संग्रह 'सोजे वतन' प्रकाशित हुआ। इसके बाद उर्दू में ही 'खाके परवाना', 'फिरदोसयें', 'खयाल', 'जादेराह', 'दूध की कीमत', 'बारदात', 'नजात', आदि कहानी संग्रह प्रकाशित हुए।[2] मन्नन द्विवेदी गजपुरी ने प्रेमचन्द को निम्नलिखित भूमिका से हिन्दी कहानी मन्दिर में प्रतिष्ठित किया– ''उर्दू संसार के हिन्दी महारथियों में प्रेमचन्द जी का स्थान बहुत ऊँचा है प्रेमचन्द ने मातृभाषा के पूजनार्थ नागरी मन्दिर में प्रवेश किया और माता ने ह्रदय लगाकर अपने इस यशशाली प्रेम–पुत्र को अपनाया।[3]

प्रेमचन्द ने प्राचीन भारतीय चेतना से लेकर प्रायः समस्त आधुनिक पश्चिमी भावधाराओं का अपनी लेखनी में सफल प्रयोग किया।[4] प्रेमचन्द की कहानियों का अध्ययन अलग–अलग विद्वानों ने भिन्न–भिन्न वर्गीकरण के माध्यम से किया है। प्रतिपाद्य अर्न्तवस्तु के आधार पर प्रेमचन्द की कहानियों को निम्न भागों में बांटा जा सकता है –

1. लोककथाओं पर आधारित ऐतिहासिक कहानियाँ।
2. मध्यवर्गीय सामाजिक जीवन पर आधारित कहानियाँ।
3. नारी जीवन की समस्याओं से सम्बन्धित कहानियाँ।
4. ग्रामीण जीवन से सम्बन्धित कहानियाँ।
5. राष्ट्रीय आन्दोलन से सम्बन्धित कहानियाँ।
6. व्यंग्यात्मक कहानियाँ।

1. **लोककथाओं पर आधारित ऐतिहासिक कहानियाँ–** प्रेमचन्द इस बात से पूर्ण सहमत थे कि लोक कथाओं एवं ऐतिहासिक घटनाओं को आधार बनाकर वीरता और नैतिकता का सकारात्मक प्रभाव पाठक पर डाला जा सकता है। अतः आदर्श जीवन की स्थापना एवं जनसामान्य के मन का परिष्कार करने के लिए उन्होने लोक कथाओं को आधार बनाकर कुछ कहानियों की रचना की। इन कहानियों में 'रानी सारन्धा', 'पाप का अग्निकुण्ड', 'दिल की रानी', 'शिकार', 'मर्यादा की वेदी', 'राजा हरदौल', 'धोखा' और 'जुगनू की चमक' आदि कहानियाँ ऐतिहासिक सामग्री और संवेदनाओं से लिखी गयी थी। ''रानी सारन्धा की सृष्टि तो निश्चित रूप से इतिहास, कल्पना और लोक कथा के संयोग से हुई है।''[5] चरित्र प्रधान यह कहानी नारी की वीरता, शौर्य एवं देश के प्रति अपने कर्त्तव्य का बोध कराती है। 'पाप का अग्निकुण्ड' कहानी नैतिक कर्त्तव्य का बोध कराती है तो 'आत्माराम का तोता' मानो अपने मालिक को प्रेम का प्रतिदान दे देता है। उसी को ढूढ़ते–ढूढ़ते आत्माराम को सोने की मुहरें मिल जाती हैं।' ''लोक–वार्ताओं में इस प्रकार आकस्मिक धन मिल जाने की घटनाएँ इतनी आती हैं, कि उन्हें कथानक रूढ़ि माना जा सकता है।''[6]

'राजा हरदौल', विक्रमादित्य का तेगा, आल्हा आदि कहानियाँ बुन्देलखण्ड के राजाओं द्वारा स्वतंत्रता

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

प्राप्ति के लिए किये गये संघर्ष पर आधारित हैं। 'लैला', 'न्याय', 'हिंसा परमो धर्म', 'राज्यभक्त', 'वज्रपात' इत्यादि कहानियाँ मुगलकालीन शासकों की वीरता, शौर्य, पराक्रम एवं नैतिक आचरण के ह्रासमान स्थिति का चित्रण किया गया है। ऐतिहासिक कहानियों की रचना करके प्रेमचन्द ने पाठकों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया कि अनैतिक आचरण के कारण श्रेष्ठ वैभव का अक्षय भण्डार भी समाप्त हो जाता है। प्रो0 रामचन्द्र तिवारी ने लिखा है कि– "कहीं–कहीं हम प्रेमचन्द जी की कहानियों में लोक जीवन में चलने वाले अन्ध विश्वासों, भूत–प्रेतों, नाग–पूजा आदि का चित्रण भी पातें हैं।"[7]

2. **मध्यवर्गीय सामाजिक जीवन पर आधारित कहानियाँ**– समकालीन रचनाकारों में प्रेमचन्द ही एक मात्र ऐसे कहानीकार हैं जिनमें मध्यवर्ग सर्वाधित मुखर हुआ है। वस्तुतः मध्यवर्गीय सामाजिक–आर्थिक परिवेश को आधार बनाकर ही प्रेमचन्द ने कहानियों की रचना प्रारम्भ की। ऐसा माना जाता है कि 'सौत–1' कहानी से प्रेमचन्द ने हिन्दी कहानी की शुरूआत की। इसी के आस–पास 'पंच परमेश्वर', 'सज्जनता का दण्ड', 'नमक का दारोगा', 'उपदेश' एवं 'परीक्षा' कहानियाँ लिखी गयीं एवं इन सबका संग्रह 'सप्त सरोज' नाम से 1917 में प्रकाशित हुआ। इनके अतिरिक्त मध्यवर्गीय जीवन से जुड़ी– 'धर्म संकट', 'दो भाई', 'कप्तान साहब', 'दफ्तरी', 'मृत्यु के पीछे', आदि कहानियों की रचना प्रेमचन्द ने की। इन कहानियों में 'पुलिसिया हथकण्डे', वकीलों की दलीलें, सुनारों की व्यवसायिकता, शहरी–ग्रामीण जीवन की समस्याओं, मनोभावों एवं अन्तर्द्वन्दों का चित्रण मिलता है।

डॉ0 कामेश्वर का मानना है कि – प्रेमचन्द युग हिन्दी कथा का स्वर्ण युग माना जाता है। वस्तुतः प्रेमचन्द ने ही हिन्दी कहानी को आधारशिला प्रदान की, जिस पर आगे चलकर हिन्दी कहानी का भव्य भवन निर्मित हुआ। उन्होनें हिन्दी कहानी को पूर्णतया मध्यवर्ग से जोड़ा। उसकी यथार्थ घटनाओं को ही उन्होनें अपनी कहानी में स्थान दिया और साधारण मनोरंजन से उठाकर कहानी को जीवन की मध्यवर्गीय जीवन गाथा का अमर गायक बनाया।[8]

जीवन के अच्छे बुरे अनुभवों एवं संघर्षों से भरी 'बूढ़ी काकी', 'गुमराह', 'विमाता', 'त्यागी का प्रेम', 'सती', 'मांगे की घड़ी', 'प्रायश्चित', 'दो सखियाँ', 'दो कब्रे', 'माता का ह्रदय' आदि कहानियाँ प्रेमचन्द की परिपक्व मानसिकता का परिचय देती हैं।

शान्ति–1', 'स्वर्ग की देवी', 'एक्ट्रेस', 'मंत्र–2', 'उन्माद', 'ढपोरशंख', 'स्वामिनी', 'चमत्कार', 'नशा', 'लाटरी' आदि कहानियाँ मध्यवर्गीय कुरीतियों, पाखण्डों एवं व्याभिचारों का नग्न स्वरूप प्रस्तुत करती हैं।

3. **नारी जीवन की समस्याओं से सम्बन्धित कहानियाँ**– प्रेमचन्द के नारी पात्रों में पर्याप्त विविधता है। शहरी–देहाती, उच्चवर्ग, मध्यवर्ग, निम्न वर्ग, सती, कुलटा, पति का मार्गदर्शन करने वाली, सब तरह के नारी पात्र प्रेमचन्द की कहानियों में मिलतें हैं। नारी जीवन से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं– अनमेल विवाह, बाल विवाह, दहेज प्रथा, वेश्यावृत्ति आदि को लेकर प्रेमचन्द ने अनेक उत्कृष्ट कहानियों की रचना की। 'बड़े घर की बेटी', 'बेटो वाली विधवा', 'आहूति', 'शान्ति', 'कायर', 'निर्वासन', 'बहिष्कार', 'सुहाग की साड़ी', 'कुसुम', 'वेश्या', 'मिस पद्मा', 'जादू', 'दूध का दाम', 'सती', 'भूत', 'माँ', 'सुभागी' आदि कहानियाँ नारी जीवन की विविध समस्याओं एवं नारी मनस्थितियों के भिन्न–भिन्न रूपों का दर्शन कराती हैं।

नारी जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए प्रेमचन्द शिक्षा को अनिवार्य मानते थे। उनका विचार था – "जब तक स्त्रियाँ शिक्षित नहीं होंगी और सब कानूनी अधिकार उनको बराबर न मिल जायेंगें, तक तक महज काम करने से काम नही चलेगा।"[9]

अनमेल विवाह के प्रति प्रेमचन्द के मन में गहरी चिन्ता थी। इस समस्या पर उन्होनें अनेक पात्रों की सर्जना की। 'शान्ति', 'कुसुम', 'कन्या विवाह', 'गृहदाह', 'स्त्री–पुरूष', ऐसी कहानियाँ हैं जिनमें नायिकाओं का विवाह उनके माता–पिता, सगे–सम्बन्धियों ने लोलुपता वश अथवा आर्थिक अभाव के कारण अयोग्य व्यक्तियों से कर दिया।

प्रेमचन्द किसी भी वर्ण, अवस्था या जाति की स्त्री की चरित्रहीनता सहन नही कर पाते। पातिव्रत प्रेमचन्द के लेखन का मूल स्वर है। अतः 'त्यागी का प्रेम' की आनन्दीबाई जैसी स्त्रियाँ जब इस सीमा का अतिक्रमण करती हैं तो प्रेमचन्द जीवन के अन्तिम दिनों तक उन्हे रूलाकर ही उनसे उनकी दुर्बलता का प्रायश्चित करवातें हैं।

'गृहनीति' कहानी में उन्होनें पुरूष की अप्रतिम प्रतिभा के द्वारा गृह–कलह की सार्वकालिक एवं सार्वजनीय समस्या को बड़े ही सुन्दर ढंग से सुलझाया है। प्रेमचन्द विधवा–नारी की जीवन दशाओं के प्रति सचेत हैं। उन्होनें अपनी कहानियों में दिखाया है कि पति की मृत्यु के पश्चात् किस प्रकार एक–एक करके सारे अधिकार विधवा स्त्री के हाथों से छिन जाते हैं। 'बेटों वाली विधवा' इसका ज्वलन्त उदाहरण है। 'शान्ति' कहानी के अन्तर्द्वन्द के सम्बन्ध में प्रो0 रामचन्द्र तिवारी ने लिखा है कि– "प्रेमचन्द अन्त तक यह निर्णय नहीं कर सके थे कि नारी को पूर्ण स्वतंत्रता मिलनी चाहिए या नहीं।" 'शान्ति' नामक कहानी में उनका यह द्वन्द्व भली–भाँति प्रकट हुआ है।"[10]

4. **ग्रामीण जीवन से सम्बन्धित कहानियाँ**– "प्रेमचन्द पहले व्यक्ति थे जो सामग्री के लिए गाँवों की ओर

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

गये और जिन्होनें सीधे–सादे ग्रामीणों के घटनाहीन जीवन को अपनी कहानी का विषय बनाया। किसान का मन उनके लिए खुली पुस्तक के समान था।"[11]

प्रेमचन्द ने ग्रामीण जीवन के विभिन्न निर्धन परिवारों की कथा को आधार बनाकर कृषक एवं कृषि श्रमजीवी समाज का चित्रण किया है। ग्रामीण कृषक और श्रमजीवी वर्ग से जुड़ी कहानियों में 'गरीब की हत्या', 'बेटी का धन', 'बलिदान' तथा 'पशु से मनुष्य' आदि कहानियाँ आती हैं।

श्रेष्ठ नैतिक आचरण एवं पुरातन मूल्यों की स्थापना भी प्रेमचन्द ग्रामीण कृषकों के माध्यम से करते हैं। समाज को प्रगतिशील एवं परिवर्तित करने के लिए उन्होनें ह्रदय परिवर्तन का मार्ग अपनाया। यह ह्रदय परिवर्तन समाज के व्यवस्थापकों तक ही सीमित नही है, अपितु मैकू जैसा पात्र भी इस मार्ग पर चलकर आदर्श बन जाता है।

'मुक्ति का मार्ग', 'सवा सेर गेहूँ', 'सभ्यता का रहस्य', 'पिसनहारी का कुँआ', 'पूस की रात', 'सुजान भगत', 'बाबा जी का भोग', 'विध्वंस' आदि कहानियों में कृषक जीवन की यथार्थवादी कथावस्तु को स्थान दिया गया है। ग्रामीण शोषण और ऋणभार से त्रस्त होकर कृषकों के मजदूर बनने की कथा भी कहानियों में है। प्रेमचन्द युग में छोटा किसान मजदूर बन रहा था। 'पूस की रात' का हल्कू उसी प्रकार मजदूर बना जैसे गोबर और होरी।

'सद्गति', 'ठाकुर का कुँआ', 'कफन', 'लांछन–2', 'नेऊर', 'प्रेम का उदय', 'ईदगाह' आदि कहानियाँ ग्रामीण श्रमिक जीवन की समस्याओं से प्रेरित हैं। इन कहानियों में अछूत वर्ग की पीड़ा एवं शोषण, गरीबी आदि का यथार्थ चित्रण मिलता है। "किसानों के शोषण का एक बड़ा कारण उसका धार्मिक अन्धविश्वास भी है। इसके अतिरिक्त है जमींदार और महाजन जिनकी शोषण क्रिया विश्व इतिहास में अद्वितीय है।[12]

5. **राष्ट्रीय आन्दोलन से सम्बन्धित कहानियाँ–** प्रेमचन्द ने सक्रिय राजनीति में कभी कोई हिस्सा नही लिया लेकिन स्वतंत्रता आन्दोलन में उनका योगदान किसी राजनेता से कम नही है। उनकी अधिकांश कथा–कृतियों में राजनीतिक हलचलों का चित्रण देखा जा सकता है। प्रेमचन्द के तो लेखन की शुरूआत ही इसी से हुई थी। उनकी पहली कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' में प्रेमचन्द ने खून की उस आखिरी बूँद को जो देश की आजादी के लिए गिरती है, दुनिया का सबसे अनमोल रतन माना है।[13]

प्रेमचन्द काल में राष्ट्रीय भावपक्ष का मूल स्रोत कांग्रेस और गाँधीवाद था। राष्ट्रीय भाव के इसी केन्द्र बिन्दु पर– 'सुहाग की साड़ी', 'सत्याग्रह', 'तावान', विचित्र होली', 'अनुभव', 'होली का उपहार' आदि कहानियाँ लिखी गयी हैं। स्वातन्त्रय–संग्राम काल में जबकि प्रत्येक व्यक्ति बीमारी का एकमात्र कारण इसकी परतंत्रता है। आजादी मिलते ही यहाँ रामराज्य स्थापित हो जायेगा। उस समय भी प्रेमचन्द यह समझ रहे थे कि केवल स्वतंत्रता से ही यह बीमारी दूर नहीं होगी। 'आहूति' कहानी में रूपमती के माध्यम से प्रेमचन्द कहतें हैं– अगर स्वराज्य आने पर भी सम्पत्ति का यही प्रभुत्व रहे और पढ़ा–लिखा समाज यों ही स्वार्थान्ध बना रहे, तो मैं कहूँगा ऐसे स्वराज्य का न आना ही अच्छा। अंग्रेजी महाजनों की धन लोलुपता और शिक्षितों का स्वहित ही आज हमें पीसे डाल रहा है। उन्हीं बुराईयों को क्या प्रजा इसलिए सिर चढ़ाएगी कि वे विदेशी नही स्वदेशी है।[14]

'सोजेवतन' में संकलित पाँचों कहानियाँ– 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन', 'शेख मखमूर', 'यही मेरा वतन है', 'सांसारिक प्रेम और देश प्रेम' तथा 'शोक का पुरस्कार' ऐतिहासिक शासक वर्ग की वीरता, शौर्य पराक्रम एवं नैतिक मर्यादा का स्मरण कराती है।

'आदर्श विरोध', 'लाग–डाट', 'चकमा', 'मैकू', 'समरयात्रा', 'क्षमा', 'विश्वास', 'इस्तीफा' आदि प्रेमचन्द की राजनैतिक चेतना से प्रभावित कहानियाँ हैं। 'समरयात्रा तथा अन्य कहानियाँ' में राष्ट्रीय आन्दोलन के विभिन्न रूपों–शराब बन्दी, अंग्रेजी कपड़ों की होली जलाना, बड़े–बड़े जुलूसों के चित्र खीचें गये है।

6. **व्यंग्यात्मक कहानियाँ–** समाज की विद्रुपताओं का चित्रण करने में प्रेमचन्द ने व्यंग्य का आश्रय लिया है। ये काव्यात्मक कहानियाँ आकार में छोटी है पर इनकी मारक क्षमता अधिक है। 'मनुष्य का परम धर्म', 'खून सफेद', 'अधिकार', 'चिन्ता', 'स्वत्व रक्षा', 'बौड़म', 'दीक्षा', 'विनोद', 'निमंत्रण', 'बहिष्कार', 'रामलीला', 'दारोगा जी', 'फातिहा' आदि कहानियों में विभिन्न सामाजिक स्वरूपों का यथार्थ चित्रण करके उसकी आलोचना की है। प्रेमचन्द ने ढोंगी पण्डितों, मुल्लाओं काजी एवं पादरी आदि का सबसे अधिक अपने व्यंग्य वाणी का शिकार बनाया। इसलिए रामविलास शर्मा ने लिखा है कि – "प्रेमचन्द कबीर के बाद हिन्दी के सबसे बड़े व्यंग्यकार हैं।"

कुछ कहानियों में पशुओं के माध्यम से भी प्रेमचन्द ने तीखा व्यंग्य किया है। 'पूर्व संस्कार', 'दो बैला की कथा', 'दूध का दाम', 'स्वरक्षा' आदि इसी वर्ग की कहानियाँ हैं।

डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी ने 'कफन' कहानी के व्यंग्य पर टिप्पणी करते हुए लिखा है– "औरत के चीखने–मरने की स्थिति के साथ घीसू माधव के भरपेट पूड़ी–तरकारी खाने की महत्वकांक्षा एक ऐसा व्यंग्य करती है कि, जिसकी मिसाल अन्यत्र दुर्लभ है।[15] प्रेमचन्द का व्यंग्य उन कहानियों में उत्कृष्ट रूप में मिलता है जहाँ व्यंग्य का केन्द्र तो कोई पात्र ही है, किन्तु व्यंग्य उसकी विकलांगता के लेकर नहीं, उसकी स्थिति को लेकर है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

उपर्युक्त वर्गीकृत कहानियों में ग्रामीण जीवन से सम्बन्धित कहानियों को छोड़कर लगभग सभी कहानियाँ नगरीय जीवन से जुड़ी हैं। भले ही उन कहानियों के पात्र गाँव से आये हो परन्तु शहर आकर वह शहरी सभ्यता में रंग जाते हैं। हालांकि लालफीता और हिंसा परमों धर्मः कहानी के नायक, जो गाँव से शहर आये थे, शहरी जीवन से ऊबकर इसके विषैले वातावरण को त्यागकर पुनः गाँव चले जाते हैं, परन्तु ऐसे पात्र कम ही है। प्रेमचन्द की कहानियों में शहरी जीवन के कथानकों की कमी नही है। 'आदर्श विरोध', 'ब्रह्म का स्वांग', 'पशु से मनुष्य', 'पत्नी से पति', 'जेल', 'शान्ति', 'मंत्र–1', 'मंत्र–2', 'सुहाग की साड़ी', 'लोकमत का सम्मान', 'सत्याग्रह', 'विनोद', 'भाड़े का टट्टू', 'सौभाग्य के कोड़े', 'दीक्षा', 'निर्वासन', 'झाँकी', 'लांछन', 'चकमा', 'कानूनी कुमार', 'मृतक भोज', 'मिस पद्मा', 'डामुल का कैदी', 'दो कब्रें' आदि शहरी जीवन से सम्बन्धित कहानियाँ है जिनका उल्लेख यथा किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी साहित्य– हजारी प्रसाद द्विवेदी– पृष्ठ – 435.
2. प्रेमचन्द की कहानी कला – श्री चन्द्रभानु मिश्र 'प्रभाकर' – पृष्ठ–44.
3. सप्त सरोज की भूमिका से (चतुर्थ संस्करण) हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता।
4. हिन्दी कहानी की शिल्प विधि का विकास – डॉ0 लक्ष्मी नारायण लाल, पृष्ठ–93.
5. प्रेमचन्द : डॉ0 सत्येन्द्र, पृष्ठ 7 131.
6. प्रेमचन्द : भारतीय साहित्य सन्दर्भ, डॉ0 निर्मला जैन, पृष्ठ–39 (डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी के लेख से)।
7. हिन्दी का गद्य साहित्य – प्रो0 रामचन्द्र तिवारी, पृष्ठ–401.
8. नई कहानी और मध्यवर्ग – डॉ0 कामेश्वर प्रसाद सिंह, पृष्ठ – 74.
9. प्रेमचन्द घर में – शिवरानी देवी, पृष्ठ – 260.
10. हिन्दी का गद्य साहित्य – रामचन्द्र तिवारी, पृष्ठ – 401.
11. प्रेमचन्द : एक विवेचन, इन्द्रनाथ मदान पृष्ठ 7 123.
12. प्रेमचन्द : रामविलास शर्मा, पृष्ठ – 79.
13. गद्य के प्रतिमान – प्रो0 विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, पृष्ठ – 10.
14. कफन और अन्य कहानियाँ (संग्रह) पृष्ठ – 87.
15. प्रेमचन्द : भारतीय साहित्य सन्दर्भ – डॉ0 निर्मला जैन (डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी का लेख) पृष्ठ – 43.

*****